AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन।

शोधार्थी (शिक्षा)– संजय कुमार गुप्ता जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
शोध मार्गदर्शक–डॉ. (श्रीमती) रश्मि शर्मा (प्राचार्य) संत योगी मानसिंह शिक्षा महाविद्यालय, ग्वालियर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

शोध सारांश–

प्रत्येक राष्ट्र के विकास में वहाँ की शिक्षा प्रणाली का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता हैं आधुनिक काल में शिक्षा शिक्षण एवं अधिगम की प्राचीन अवधारणाऍ बदल चुकी है। शिक्षा के प्रसार में वृद्वि के साथ साथ शिक्षा के स्तर में उन्नयन करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता हैं। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। इसके तीन अंग हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम। पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक व शिक्षार्थी की अन्तःक्रिया से ही अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी में केवल पाठ्यक्रम ही हस्तान्तरित नहीं किया जाता बल्कि वह अपने व्यक्तित्व की छाप भी छोड़ता है। शिक्षण की प्रभावोत्पारकता बहुत कुछ शिक्षकों की अर्हता, प्राप्त योग्यता, कुशलता व दक्षता पर अवलम्बित हैं। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का विस्तार शिक्षक की गुणवत्ता पर ही निर्भर करता हैं। कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से उपर नही हो सकता। वर्तमान दौर में शिक्षकों को अपने व्यवसाय के सामर्थ्य को सिद्ध करने के लिए ज्ञान, कौशल, दक्षता, मूल्य व अभिवृति संबधी योग्यताओं को अधिक परिवर्तित करने की आवश्यकता है।शिक्षा की गुणात्मक अभिवृद्वि का एक महत्वपूर्ण घटक शिक्षण दक्षता हैं जो कि शिक्षण के समय परिलक्षित होता हैं। अवलोकन पद्वति द्वारा शिक्षण गतिविधियों, शिक्षण दक्षता तथा इसके धटकों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती हैं।इस बिन्दु को ध्यान में रखते हुए यह प्रासंगिक हैं कि शिक्षा के क्षेंत्र में भी शिक्षक वास्तविक कक्षा शिक्षण के उत्तरदायित्वों का निर्वहन उचित विधि से करते हैं या नहीं। अतः शिक्षकों के कक्षा में व्यवहार को ज्ञात करने का प्रयास प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया। ताकि यह ज्ञात किया जा सकें की कक्षा शिक्षण के किन किन क्षेत्रों में शिक्षकों का व्यवहार शिक्षण दक्षता के अनुरूप हैं। तथा कहाँ उन्हें और अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं। ताकि वे भविष्य में एक योग्य शिक्षक बन सकें।

प्रस्तावना–शिक्षा मानव जगत की धरोहर हैं। प्रत्येक राष्ट्र के विकास में वहाँ की शिक्षा प्रणाली का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता हैं आधुनिक काल में शिक्षा शिक्षण एवं अधिगम की प्राचीन अवधारणाऍ बदल चुकी है। शिक्षा के प्रसार में वृद्वि के साथ साथ शिक्षा के स्तर में उन्नयन करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता हैं। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। इसके तीन अंग हैं–शिक्षक, शिक्षार्थी व

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

पाठ्यक्रम। पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षक व शिक्षार्थी की अन्तःक्रिया से ही अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी में केवल पाठ्यक्रम ही हस्तान्तरित नहीं किया जाता बल्कि वह अपने व्यक्तित्व की छाप भी छोड़ता है। छात्रों में मनुष्योचित अभिदृष्टि के विकास के लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण कारक होता हैं शिक्षा संस्थानों से निकलने वाले विद्यार्थी गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन के रूप में कार्य करते हैं तो राष्ट्र की प्रगति निश्चय ही सहज रूप से होगी। शिक्षकों की प्रभावशीलता शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित होती है सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का विस्तार शिक्षक की गुणवत्ता पर ही निर्भर करता हैं। शिक्षण की प्रभावोत्पारकता बहुत कुछ शिक्षकों की अर्हता, प्राप्त योग्यता, कुशलता व दक्षता पर अवलम्बित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि किसी समाज में शिक्षक का दर्जा उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, लोकाचार को प्रतिबिम्बित करता है। कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से उपर नही हो सकता।वर्तमान दौर में शिक्षकों को अपने व्यवसाय के सामर्थ्य को सिद्ध करने के लिए ज्ञान, कौशल, दक्षता, मूल्य व अभिवृति संबधी योग्यताओं को अधिक परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

चौरासिया 2005 द्वारा शिक्षकों के कक्षा शिक्षण व क्रियाकलाप पर किये गए शोध कार्य में शिक्षकों द्वारा कक्षा में की गई अन्तःक्रिया का प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ अभिप्रेरणा स्तर पर भी पड़ता हैं।तिवारी जी.एन. (2001) ने प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और प्रशिक्षण की आवश्यकता पर अवलोकनात्मक अध्ययन में पाया कि शिक्षण में सामुदायिक संसाधन स्त्रोत का कक्षा शिक्षण में प्रयोग करना, छात्रों को निर्देशन देना, क्रियात्मक अनुसंधान करना, अनुवर्ती सेवा देना इत्यादि के प्रति कक्षा शिक्षण दक्षता कम पाई गई।जैठी रेनू और कुमार (2007) ने शिक्षकों की प्रभावशीलता पर अध्ययन किया। जिसमें शिक्षकों के व्यक्तित्व, शिक्षण योजना, शिक्षक छात्र अन्तःक्रिया, निर्देशन इत्यादि शिक्षक की अन्य दक्षताओं की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।अरुण कुमार मिश्र एवं दिलीप कुमार अवस्थी (2010) दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा पर अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष निकला कि दक्षता आधारित शिक्षा दी जाय तो इस पेशे के लिए योग्य व्यक्ति को अपनाने की बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है। पेशागत तैयारी में वे सभी उपकरण होने चाहिए जो ज्ञान और कुशलताओं को बढ़ाने के लिए आवश्यक होती है।पासी और शर्मा पासी और शर्मा (1982) माध्यमिक स्तर के शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता का अध्ययनमें शिक्षकों के प्रश्न पूछने सबंधी कौशल में दक्षता सामान्य पाई गई। शिक्षकों द्वारा पाठ का प्राक्कथन संबंधी कौशल में दक्षता कम पाई गई।

संयक्त राष्ट्र केसतत विकास लक्ष्य–4 (एसडीजी–4) का मानना है कि शिक्षा एक सशक्त गुणकहै; जोआत्मनिर्भर और सक्षम बनाती है, कौशल को बढ़ाकर आर्थिक विकास को सशक्त बनाती हैऔर श्रेष्ठआजीविका केअवसरों को प्रदान कर लोगों के जीवन को उत्तम बनाती है। एसडीजी–4

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

नेसार्वभौमिकगुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करनेपर ज़ोर दिया है।आ0 राममूर्ति समिति (1990) के अनुसार आज की परिस्थितियों में प्रशिक्षण कार्यक्रम को दक्षता आधारित बनाया जाना चाहिए।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट हैं कि शिक्षा की गुणात्मक अभिवृद्वि का एक महत्वपूर्ण घटक शिक्षण दक्षता हैं जो कि शिक्षण के समय परिलक्षित होता हैं।अवलोकन पद्वति द्वारा शिक्षण गतिविधियों, शिक्षण दक्षता तथा इसके धटकों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती हैं। चूँकि किसी देश का विकास गुणवत्तायुक्त शिक्षा से प्रभावित होता हैं कि और शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित होती हैं।शिक्षा के क्षेंत्र में गुणात्मक अभिवृद्वि का एक महत्वपूर्ण घटक शिक्षण दक्षता हैं जो कि शिक्षण के समय परिलक्षित होता हैं कि इस बिन्दु को ध्यान में रखते हुए यह प्रासंगिक हैं कि शिक्षा के क्षेंत्र में भी शिक्षक वास्तविक कक्षा शिक्षण के उत्तरदायित्वों का निर्वहन उचित विधि से करते हैं या नहीं। अतः शिक्षकों के कक्षा में व्यवहार को ज्ञात करने का प्रयास प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया। ताकि यह ज्ञात किया जा सकें की कक्षा शिक्षण के किन किन क्षेत्रों में शिक्षकों का व्यवहार शिक्षण दक्षता के अनुरूप हैं। तथा कहाँ उन्हें और अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं। ताकि वे भविष्य में एक योग्य शिक्षक बन सकें।प्रस्तुत शोध में *उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन*किया गयाहै।

1.शोध के उद्वेश्य–

1 शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।

2 अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।

3 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4 शहरी एवंग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 शोध परिकल्पना–

1 शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

3 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण–

शिक्षण दक्षता– शिक्षण दक्षता का अभिप्राय व्यावसायिक योग्यता, जिसमें अर्जित ज्ञान एवं उच्च स्तर की अवधारण प्रस्तुत करने की योग्यता शामिल है। दक्षता का अर्थ है छात्रों को कार्यकुशलता और संरक्षण का सम्यक् ज्ञान देना। शिक्षण प्रभाविकता में ही शिक्षण के सिद्वान्त, शिक्षण के उद्वेश्य तथा शिक्षण के प्रतिमान निहित हैं। शिक्षण दक्षता से तात्पर्य हैं प्रभावक रूप से विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण अर्थात पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तथा वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों की सरल सुगम तथा वस्तुनिष्ठ रूप से ऐसा शिक्षण जो रोचक हो आकर्षक हो तथा छात्रो को पुर्नबलन प्रदान करता हो प्रभावी समझा जाता हैं।शिक्षण दक्षता को अध्ययन के सभी तीन स्तरों के संन्दर्भ में समझना चाहिए–

1 शिक्षण से पूर्व तत्परता की अवस्था

2 शिक्षण की अन्तःप्रक्रिया की अवस्था

3 व्यवहारगत् मूल्यांकन की अवस्था

शिक्षण दक्षता का विचार प्रत्येक प्रकार के अधिगम के साथ परिवर्तित होता रहता हैं। शोधकार्य में शिक्षकों की कक्षागत अन्तःक्रिया का विश्लेषण कर उनकी कक्षागत शिक्षण दक्षता का पता लगाया गया।

4समस्या का परिसीमन–

1. प्रस्तुत शोधकार्य हेतु ग्वालियर जिले का चयन किया गया।

2. शोधकार्य के लिये न्यादर्श के रूप में ग्वालियर जिले के उच्च/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का का चयन किया।

3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत 150 शिक्षकों का चयन किया गया।

शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक– 50, ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक– 50 एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक– 50 का चयन किया गया।

4. शिक्षकों में शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं दोनों शामिल है।

6. शासकीय विद्यालयों से तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जो म.प्र. शासन द्वारा संचालित व म.प्र. माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। अशासकीय विद्यालयों से तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जो स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा संचालित व म.प्र. माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। उच्च

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

माध्यमिक विद्यालयों से तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जिनमें कक्षा 9 व 10 संचालित हैं। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से तात्पर्य ऐसे विद्यालयों से है जिनमें 9 से 12 तक कक्षाए संचालित हैं।

5 अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया–शोध अध्ययन हेतु शोध विधि के लिए घटनोत्तर अनुसंधान विधि का चयन किया गया। इसके अन्तगर्त किसी भी शोध समस्या में कारण प्रभाव का अध्ययन किया जाता हैं। घटनोत्तर अनुसंधान एक प्रकार से शुद्ध सहसम्बन्धात्मक अनुसंधान हैं। किसी घटना या परिस्थिति के घटित हो जाने बाद इनका मापन किया जाता हैं और मापन के आधार सहचारिता ज्ञात की जाती हैं और साथ साथ कार्य–कारण सम्बन्ध का भी अध्ययन किया जाता हैं। प्रयोगात्मक अनुसंधानों से बहुत कुछ मिलता हुआ है, इसे घटनोत्तर अनुसंधान कहते हैं।

6 अध्ययन में न्यादर्श चयन विधि– शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध समस्या की दृष्टि से न्यादर्श के चुनाव हेतु उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श प्रतिचयन या सविचार प्रतिचयन विधि का चयन किया हैं। जिसमें अध्ययनकर्ता संम्पूर्ण जनसंख्या में से अपने उद्देश्य के अनुसार अध्ययन ईकाईयों का चयन करता हैं। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत 150 शिक्षकों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि किया गया। शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक संख्या– 50, ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक संख्या– 50 एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक संख्या– 50 का चयन किया गया।प्रस्तुत शोध में आकड़ो का संकलन 2014 सत्र के दौरान किया शोधार्थी द्वारा स्वयं किया गया।

7 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण एवं उपकरण का प्रशासन– परीक्षण संबधी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्य की दृष्टि से निम्न मानकीकृत उपकरणों का शोधकार्य में प्रयोग किया है। शिक्षकों की शिक्षण दक्षता हेतु– फलैण्डर्स की कक्षा अन्तःक्रिया विश्लेषण प्रणाली की अवलोकन मापनी का उपयोग किया गया।शिक्षकों की शिक्षण दक्षता उपकरणों का प्रशासन शिक्षा संस्थानों के प्रधानों से अनुमति लेकर कक्षागत परिस्थितियों में प्रयुक्त किया गया।

8 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि–प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों (मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी परीक्षण) का प्रयोग किया गया हैं।

1 टी परीक्षण (t-test) का प्रयोग स्वतंत्र चर के आश्रित पर प्रभाव को देखने हेतु प्रयुक्त किया गया।

2 आँकडों का विश्लेषण कम्प्यूटर की सहायता से किया गया।

3 विश्लेषणात्मक आँकडों द्वारा व्याख्या व निष्कर्ष निकालें गये।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

9 तथ्यों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण–एकत्रित प्रदत्तों के सारणीयन के पश्चात् निर्धारित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया, प्रत्येक परिकल्पना के परीक्षण हेतु समूहों का मध्यमान, मानक विचलन तथा 't' का मान ज्ञात किया गया। इस प्रकार परिकल्पना के विश्लेषण से निम्न परिणाम प्राप्त किए।

उद्देश्य 1 शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका सं0– 1

शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान

समूह की प्रकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रांश	सारणीमान	सार्थकता स्तर	परिणाम
शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक	50	51.83	6.56	2.90	98	1.98	0.05	Ho अस्वीकृत
शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक	50	47.88	6.98			2.61	0.01	

स्वतंत्रता के अंश = 50 + 50 − 2 = 98

तालिका 1में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता परीक्षण के मध्यमानों में 3.95 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण सेसार्थक है, क्योंकि प्राप्त टी का मान 3.10 है, जो कि 0.05 एवं 0.01 दोनो स्तरों पर सार्थकता के न्यूनतम निर्धारित मानों की अपेक्षा अधिक है। अतः सांख्यिकीय दृष्टिकोण से दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर सार्थक है।

उद्देश्य 2 शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तालिका सं0–2

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता परीक्षण के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान

समूह की प्रकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	स्वतंत्रांश	सारणीमान	सार्थकता स्तर	परिणाम
शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक	50	51.83	6.56	1.06	98	1.98	0.05	Ho स्वीकृत
ग्रामीणशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक	50	50.9	7.32			2.61	0.01	

स्वतंत्रता के अंश $= 50 + 50 - 2 = 98$

तालिका 2 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता परीक्षण के मध्यमानों में 0. 93 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण सेसार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त टी का मान 1.06 है, जो कि 0.05 एवं 0.01 दोनो स्तरों पर सार्थकता के न्यूनतम निर्धारित मानों की अपेक्षा कम है। अतः सांख्यिकीय दृष्टिकोण से दोनों समूहों के मध्यमानों में अंतर सार्थकनहीं है।

10 परिणामों की विवेचनाएवं निष्कर्ष–

परिकल्पना 1– शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष–तालिका 1 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता परीक्षण के मध्यमानों में अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक हैअतः सांख्यिकीय दृष्टिकोणसेदोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर होने के कारण, **शून्य परिकल्पनाअस्वीकृत** की जाती है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

विवेचना–इससे स्पष्ट होता हैं कि शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर है। चूँकि शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों का मध्यमान शहरी अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

कक्षागत् परिस्थितियों में शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक शिक्षण के प्रति अधिक दक्ष पाए गए। क्योंकि शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक कक्षा को रूचिकर बनाने, छात्रों को सिखने के लिए प्रोत्साहित करने, छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करने व कक्षा में अनुशासनात्मक वातावरण के निर्माण करने के प्रति अधिक सजग व समर्पित हैं। इसलिए कक्षागत् परिस्थितियों में शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों व विद्यार्थियों के मध्य अधिक सामंजस्य पाया गया।इसलिए शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक कक्षागत् परिस्थितियों में अधिक प्रभावी रूप से शिक्षण कार्य करते हैं।

परिकल्पना 2–शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष–तालिका 2 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण दक्षता परीक्षण के मध्यमानों में जो अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण सेसार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त टी का मान दोनो स्तरों पर सार्थकता के न्यूनतम निर्धारित मानों की अपेक्षा कम है। अतः सांख्यिकीय दृष्टिकोण से दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर न होने के कारण, **शून्य परिकल्पना स्वीकृत** की जाती है।

विवेचना–प्राप्ताकों के सारणियन व विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट हो जाता है किपरीक्षण में शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षण दक्षता में समान स्तर के हैं, सांख्यिकीय दृष्टिकोण से उनकीशिक्षण दक्षता में कोई अंतर नहीं है। कक्षागत् परिस्थितियों में शहरी शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक एवं ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षण दक्षता में समान स्तर के हैं।

कक्षागत् परिस्थितियों में शहरी व ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक शिक्षण कार्य में सामान्य रूप से योग्य व दक्ष पाए गए। क्योंकि शहरी व ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक कक्षा को रूचिकर बनाने, छात्रों को सिखने के लिए प्रोत्साहित करने, छात्रों को उचित दिशा मेंनिर्देशित करने व कक्षा में अनुशासनात्मक वातावरण के निर्माण करने के प्रति आंशिक रूप से सजग व समर्पित हैं। इसलिए कक्षागत् परिस्थितियों में शहरी व ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों व

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

विद्यार्थियों के मध्य सामान्य सामंजस्य पाया गया। अतः शहरी व ग्रामीण शासकीय विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक सामान्य रूप से शिक्षण कार्य करते हैं।

11सुझाव–शोधकर्ता द्वाराअध्यापकों, परामर्शदाताओं एवं निर्देशनकर्ताओं हेतुसुझावबिन्दु निम्न हैं–

1. शिक्षकों के अच्छे कार्य–प्रदर्शन को पहचानना और अभिस्वीकृत करना महत्वपूर्ण होता है सबसे पहले कार्य–प्रदर्शन में कमी से निपटने पर ध्यान देना है। यह वह क्षेत्र है जिस पर शिक्षक उन कौशलों, ज्ञान और और व्यवहारों के सभी प्रकारों का उपयोग नहीं करते हैं जो एक उत्कृष्ट शिक्षक होने से संबद्ध होते हैं।
2. नीति–निर्माताओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक बच्चे को सुप्रशिक्षित, दक्ष और प्रेरणादायी शिक्षक मिले। शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है दक्षता का विकास करे, ताकि शिक्षकों को बच्चों द्वारा हस्तांतरणीय कौशल का विकास करने में मदद मिल सके।शिक्षक का विकास करना तब सर्वोत्तम होता है जब वह निरन्तर अभ्यास का हिस्सा होता है।अध्यापन के प्रदर्शन को बेहतर और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाय। इस सम्बन्ध में विश्व के शिक्षाविद्ों का यह मानना है कि मात्र पर्याप्त शिक्षक ही शिक्षा का समाधान नहीं है इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि शिक्षक शिक्षण कला में निपुण, कार्य कुशल, अच्छा ज्ञान, उचित एवं नवीन दृष्टिकोण हो। शिक्षक के कार्य कुशल बनाने के लिए एवं प्रभाविता के लिए व्यवस्थित रूप से दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम लागू करने आवश्यक है।
3. यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को सभी बच्चों की शिक्षा में सुधार करने व अपनी क्षमता को पहचान के लिए उत्कृष्ट प्रशिक्षण दिया जाए। शिक्षकों को उनका इस्तेमाल करने के लिए प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है ताकि वे सीखने संबंधी कठिनाइयों का शुरू में पता लगा सकें और इन कठिनाइयों से निपटने के लिए उपयुक्त कार्यनीतियों का प्रयोग करें। किसी शिक्षक के कक्षा में व्यवहार पर, वस्तुपरक प्रमाण की सहायता लेते हुए जितना अधिक नियमित रूप से सोच–विचार किया जाता है, इस बात की संभावना उतनी ही कम हो जाती है कि उनका प्रदर्शन उस स्तर तक गिरेगा जिसे खराब कहा जाता है
4. औपचारिक और गैर–औपचारिक दोनों क्षेत्राों में शिक्षकों को प्रौद्योगिकी का अधिकतम फायदा उठाने के लिए दक्षता प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षकों को समग्र और लचीली पाठ्यक्रम नीतियों का समर्थन देने की आवश्यकता है ताकि उपेक्षित समूहों से बच्चों की शिक्षण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
5. शिक्षकों को कक्षाओं में जाने से पहले उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए जो पढ़ाए जाने वाले विषयों के ज्ञान तथा शिक्षण पद्धतियों के बीच ज्ञान के बीच संतुलन पैदा कर सकें। सेवा–पूर्व शिक्षक शिक्षा के अंतर्गत पर्याप्त कक्षा शिक्षण अनुभव को

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

प्रशिक्षण का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि वे योग्य शिक्षक बन सकें। इसे शिक्षकों को व्यावहारिक कौशल प्रयास करना चाहिए। एन0सी0टी0ई0 ने 1988 में दक्ष शिक्षकों के लिए दक्षता क्षेत्र का निर्धारण किया है, वे इस प्रकार हैं– सीखने के संसाधनों का संगठन, पाठ्यचर्या के आदान–प्रदान की योजना, परिणाम का मूल्यांकन, सांत्वना शिक्षा कार्यक्रमों एवं पर्यावरण जागरूकता को बढ़ाना, शिक्षकों को नवीन भूमिकाओं के निर्वहन हेतु तैयार करना, समस्याओं के समाधान के लिए छात्रों को प्रशिक्षण एवं अनुपूरक शिक्षा देना, लोकतांत्रिक नागरिकता हेतु सामूहिक सेवा और विकास कार्यक्रमों का आयोजन एवं क्रियान्वयन करना। इसके अतिरिक्त दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापकों में व्यवहार, कार्यकुशलता, शिक्षण व्यवहार, ज्ञान पदार्पण आदि का विकास करके परिवर्तन लाया जा सकता है।

6. सरकारें शिक्षकों की कार्य स्थितियों में सुधार करने, यह सुनिश्चित करने कि उन्हें गैर–शिक्षण कार्य देकर उन पर अतिरिक्त भार न डाला जाए।
7. जो शिक्षक अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, उन्हें सकारात्मक प्रतिक्रिया देना भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है, ताकि वे जान सकें कि आप उनके काम करने की परिपाटियों का सम्मान करते हैं। ऐसा करना शिक्षकों को और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक की योग्यता को देखते समय, शिक्षक के व्यावसायिक देखना महत्वपूर्ण है, उसे एक व्यक्ति के रूप में नहीं।
8. अंतर्राष्ट्रीय रूप से सहमत मानकों को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए स्थापित किए जाने की आवश्यकता है ताकि उनकी तुलनीयता सुनिश्चित की जा सके।
9. निष्पादन से संबंधित वेतन में अंतरनिहित अपील होती है जो शिक्षकों को शिक्षा में सुधार करने के प्रेरित करती है। सभी शिक्षकों के निष्पादन में सुधार करने के लिए एक आकर्षक करियर और वेतन ढांचे का प्रयोग किया जाना चाहिए। पर्याप्त मुआवजा, बोनस वेतन, अच्छा आवास तथा व्यावहारिक विकास अवसरों के रूप में सहायता का प्रयोग प्रशिक्षित शिक्षकों को ग्रामीण या उपेक्षित क्षेत्रों में पद स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किया जाना चाहिए।

12उपसंहार–

प्रस्तुत अध्ययन में शोध की प्रस्तावना ,शोध का औचित्य, समस्या कथन, समस्याके उद्देश्य, परिकल्पना, समस्या का परिसीमन, न्यादर्श, अध्ययन विधि, उपकरण,सांख्यिकी, निष्कर्ष, अग्रिम शोध हेतु सुझाव, शोध की शैक्षिक उपयोगिता प्रस्तुत कीगई हैं। तदापिशोधअध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो से शिक्षा संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों कीशिक्षण दक्षता केसम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश मिल सकेगें।शिक्षा में शिक्षक द्वारा शिक्षण विधि, ग्रहकार्य, मूल्यांकन, पाठ्यक्रम निर्माण निर्देशन आदि में अनेक महत्वपूर्ण पक्षों

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

में वांछित सुधार किये जा सकते हैं जिससे विद्यार्थियों का अधिगम भी प्रभावी हो सकेगा।इन सुधारों को कार्यान्वित करके देश यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी को अच्छी शिक्षा मिले जिससे वे अपनी क्षमता को पहचान सकें और अच्छा जीवन जी सकें।

13 संदर्भ ग्रन्थ–

1.अस्थाना विपिन (2011) 'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन।

2.शुक्ला, रमाशंकर, (1989) 'शिक्षक शिक्षा' दशा एवं दिशा, जयपुर।

3.आर एशर्मा (2011) शिक्षा में अनुसंधान के मूल तत्व एव ं शोध प्रक्रिया आर लाल बुक डिपो।

4.शशीकला सरीन एवं सरीन (2008) 'शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ विनोद पुस्तक मंदिर।

5.राय पी.एन. 'अनुसंधान परिचय (1985) आगरा, लक्ष्मीनारायण लाल।

6.सुखिया एस.पी. मन्होत्रा (1970) 'शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।

7.एच. के. कपिल (1982) 'सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

8.सुखिया एस0 पी0 (1997) 'विद्यायलय प्रशासन', आगरा।

9.सिंह रामपाल (2013) 'शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन।

10.संशिक्षा, वार्षिक पत्रिका (2001) शिक्षा संकाय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

11.नई शिक्षा राष्टीय शैक्षिक मासिक पत्रिका फरवरी 2012।

12.टीचर एजूकेशन, 'ट्रेन्ड एण्ड स्ट्रेटजिक।

13.इण्डियन एजुकेशनल, 'रिव्य नेशनल काउन्सिल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग जनवरी, 2011

14.भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 32, अंक जुलाई, दिसम्बर 2013।

15.जोशी एवं मेहता (1995) 'शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धान्त और समस्याएं', राज0 हिन्दी अकादमी, जयपुर।

16.पासी और शर्मा (2010) 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन भारतीय आधुनिक शिक्षा।

17.कुमार सुरेन्द्र (2010) 'प्राथमिक स्तर पर नियमित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन, शिक्षा शास्त्र विभाग इलाहबाद। आधुनिक शिक्षा 342

18.तिवारी जी.एन. (2001) 'प्राथमिक शिक्षण शिक्षकों की दक्षता का अवलोकनात्मक अध्ययन। भारतीय आधुनिक शिक्षा।

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:3
September 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

19.मिश्र अरुण कुमार एवं अवस्थी दिलीप कुमार (2010) 'दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षाफोर्ट इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मेरठ।

20.पासी और शर्मा (1982)'माध्यमिक स्तर के शिक्षकों कि शिक्षण दक्षता का अध्ययन।

21. राजकुमार (2016)'तकनीकी शिक्षा संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षणदक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथासमायोजन पर प्रभाव का एक अध्ययन, कोटा विश्वविद्यालय कोटा।

22. https://www.teachereducation.com/

*****